

सेवक सुखद साईं (५०)

रथ पर सवार हुए आज साईं प्यारे।

देखि देखि झांकी फूले प्राण हैं हमारे॥

गोदी में बैठे हैं सीया रघुवीरा रथ को चलाती है सहिचरि सुधीरा।

नाच नाच चारों अश्व चलते उमंग से गगन से फूल वर्षाविं सुर सारे॥

रथ यह साहिब का सुख का मन्दिर है रतन जटित जामें पहिया

सुन्दर है।

शोभा और शान लखि लाजत पुंरदर है जहां तहां बाजते हैं जै जै
नगारे॥

रूप के राशि साईं आनन्द का कंद है दीन प्रति पालक उर आंगन
इन्दु है।

प्रेम के भण्डार और करुणा के सिंधु हैं सेवक सुखद साईं नैननि
के तारे॥

सूरज समान छत्र रथ पर राजे पहियों की चालि मानो जलधर
गाजे।

श्वेत चंवर दोनो और छवि छाजे बख्त बुलंद साईं जीवन
जिआरे॥

झूम झूम रथ घूमें बृज की गलियुनि में यमुना के तीर कभी वृक्ष और
बननि में।

अजब उत्साह छाया युगल आंखनि में चिरु जीओ मैगसि ये
सबही उचारे॥